

श्री गुरु चरन सरोज राज, निज मनु मुकुरु सुधारि,
बरनउ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु कल चारि.
बुद्धिलीन तनु ज्ञानिके, सुमिरौं पवन-कुमार,
बल बुद्धि विद्या देहु भोड़ि, हरहु कलेस बिकार.

जय हनुमान शान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उआगर ॥ राम हुआरे तुम रभवारे । होत न आशा बिनु पैसारे ॥
रामहूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥ सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रथक काहू को डर ना ॥

महाबीर बिकम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥ आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन हुंडल कुंचित केसा ॥ भूत पिसाय निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥

हाथ बज अरु धज्जा बिराजै । काँधे भूज जनेऊ साजै ॥ नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥ संकट तें हनुमान छुडावै । मन कम बयन ध्यान जो लावै ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥ सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लभन सीता मन बसिया ॥ और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित ज्वन कल पावै ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥ चारों जूग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामयंद्र के काज सँवारे ॥ साधु संत के तुम रभवारे । असुर निकंदन राम हुलारे ॥

लाय सज्जवन लभन जियाये । श्रीरघुबीर हरधि उर लाये ॥ अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस भर दीन ज्ञानी माता ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥

सहस बदन तुम्हरो जश गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के हुम बिसरावै ॥
सनकादिक भ्रमादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥ अंत काल रघुबर पुर ज्ञाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

जम हुबेर हिगपाल जहाँ ते । कभि कोभिद कहि सके कहाँ ते ॥ और देवता चिता न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
तुम उपकार सुथीवहि कीन्हा । राम भिलाय राज पद दीन्हा ॥ संकट कटै भिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलभीरा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेस्वर भये सब जग ज्ञाना ॥ जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
जूग सहस जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर कल ज्ञानू ॥ जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माईं । जलवि लाँधि गये अचराज नाईं ॥ जो धह पढ़े हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप;
रामलभन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप.